सचित्र जैन पाण्डुलिपियाँ– एक कलात्मक अध्ययन

(सन्दर्भ– आदिपुराण)

डी. ई. आई. डीम्ड यूनिवर्सिटी , दयालबाग , आगरा से
चित्रकला विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी
की उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध की

संक्षिप्ति

शोध निर्देशिका –

प्रो . रागिनी रॉय
असिस्टेंट , ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग
प्रमुख, कला संकाय

शोध छात्रा –

सृष्टि जैन

२०१६

रूपरेखा

सचित्र जैन पाण्डुलिपियाँ एक कलात्मक अध्ययन

(सन्दर्भ : आदिपुराण)

प्रस्तावना

अध्याय प्रथम :–

जैन धर्म की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

अध्याय द्वितीय :–

जैन पाण्डुलिपियों का प्राचीन इतिहास

अध्याय तृतीय :–

3.1 जिनसेनाचार्य आदिपुराण पाण्डुलिपि अध्ययन

3.2 जिनसेनाचार्य रचित आदिपुराण पाण्डुलिपि के चित्र

अध्याय चतुर्थ :–

4.1 पुष्पदंत रचित आदिपुराण पाण्डुलिपि अध्ययन

4.2 पुष्पदंत रचित आदिपुराण पाण्डुलिपि के चित्र

अध्याय पंचम :–

5.1 आदिपुराण पाण्डुलिपि की चित्र प्रविधि

5.2 आदिपुराण पाण्डुलिपि के चित्रों का कलात्मक अध्ययन

अध्याय षष्ठ :–

पुष्पदंत रचित एवं जिनसेनाचार्य द्वारा रचित पाण्डुलिपि चित्रों का तुलनात्मक अध्ययन

अध्याय सप्तम :–

भारतीय चित्रकला में सचित्र जैन पाण्डुलिपियों का योगदान

उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

संक्षिप्ति

सचित्र जैन पाण्डुलिपियाँ एक कलात्मक अध्ययन

(सन्दर्भ : आदिपुराण)

प्राचीन काल से ही कलाओं का अन्तःसम्बन्ध धर्म से रहा है। भारतीय कला के स्वरूप को प्रकाशित करने में जैन दर्शन का पर्याप्त योगदान है। पाण्डुलिपि चित्रों का परम्परागत रूप से भारत में आरम्भ कब और कहाँ हुआ, इस विषय में निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता परन्तु इसका एक कारण प्राचीनकाल में ज्ञान की परम्परा श्रुति स्मृति थी। काल के दुष्प्रभाव से स्मृति विस्मय हो जाने के कारण उस ज्ञान भण्डार को लिपिबद्ध करने का निर्णय लिया गया जिससे श्रुत परम्परा को संजोकर रखा जा सके। पाण्डुलिपियों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि धर्म प्रचार–प्रसार के लिये साहित्य की भाषा के साथ चित्र की भाषा प्रयोग कर अलंकरण रूप में पाण्डुलिपियों को लिपिबद्ध किया गया। चित्रयुक्त होने से पाण्डुलिपियाँ जन साधारण के लिये सहज और बोधगम्य हो जाती हैं। जिनका प्रथम रूप शिलालेख के रूप में सामने आया। शिलालेखों के साथ–साथ धीरे–धीरे पाण्डुलिपियाँ भी लिपिबद्ध की जाने लगीं। जिनमें से प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान् के जीवन पर आधारित दिगम्बर सम्प्रदाय की यह सचित्र पाण्डुलिपि है जिसका नाम ***"आदिपुराण"*** है जिनकी रचना दो आचार्यों ने की, आचार्य पुष्पदंत एवं आचार्य जिनसेनाचार्य।

जिनसेनाचार्य रचित आदिपुराण

यह पुराण आचार्य जिनसेनाचार्य द्वारा रचित ईसा की नवीं शताब्दी में व संस्कृत भाषा में लिखा गया ग्रन्थ है। पाण्डुलिपि में चित्रित चित्र राजा भोजराज के द्वारा बनवाये गये हैं। इस ग्रन्थ को पद्य में लिखा गया है तथा यह कागज पर चित्रित है। इस पाण्डुलिपि में कुल उदय पत्रों की

संख्या 763 हैं। जिनका लिपिकाल संवत् 1663 है। पाण्डुलिपि में लगभग 200 पत्रों पर चित्र एवं 563 पत्रों पर ग्रन्थकार ने आदिनाथ भगवान से सम्बन्धित जीवन चरित्र के बारे में बताया है।

प्रस्तुत पाण्डुलिपि जयपुर के दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर तेरापंथियान शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है। जो क्रम संख्या 113 एवं वेष्टन संख्या 94 पर स्थित है इस पाण्डुलिपि में 9 पंक्तियों में 35 अक्षर स्थित हैं जो संस्कृत भाषा तथा पद्य में है। इस पाण्डुलिपि का आकार 34 से.मी. से 16 से.मी. है।

पुष्पदंत रचित आदिपुराण

जैन वाङःमय में संस्कृत भाषा में आचार्य जिनसेन (ईसा की नवीं शताब्दी) द्वारा "आदिपुराण" की और उनके शिष्य आचार्य गुणभद्र (ईसा की नवीं शताब्दी) द्वारा उत्तरपुराण की रचना की गयी है इसके पश्चात् महाकवि पुष्पदंत (ईसा की दसवीं शताब्दी) ने अपभ्रंश भाषा में "महापुराण" की रचना की।

यह महापुराण अपभ्रंश साहित्य का जैन परम्परा का एक महान ग्रन्थ है। यह पाण्डुलिपि जयपुर के दिगम्बर जैन तेरापंथियान बड़ा मन्दिर के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है इस पाण्डुलिपि में उदय पत्र (687 पृष्ठ) है इसका लिपिकाल संवत् 1597 ई. (सन् 1540) फाल्गुन शुक्ल 13 है। इस समय जोगिनीपुर (दिल्ली) के महादुर्ग पर सुल्तान आलम पतिसाह का राज था तब पाल नामक शुभस्थान में "चौधरी राइमल" द्वारा महापुराण के आदि खण्ड की यह प्रति लिखवायी गयी। लेखनकार्य "विशनुदास" नाम के ब्राह्मण व्यक्ति के द्वारा किया गया और चित्र "हरिनाथ" कायस्थ और उसके परिवार द्वारा बनवाये गये।

687 पत्रों की इस पाण्डुलिपि में तीर्थंकर ऋषभदेव के जीवन–चरित्र के अनुरूप 541 रंगीन चित्र अंकित हैं। मूल पाण्डुलिपि में पत्र संख्या 10, 15, 87, 16, 132, 133 कुछ छः पत्र तदनुसार पृष्ठ संख्या 18–19, 28–29, 172–173, 190–191, 263–263 तथा 264–265 उपलब्ध नहीं हैं।

प्राकृतिक विपदाओं, जनसंख्या वृद्धि तथा विदेशी आक्रान्ताओं के कारण सामाजिक जीवन में अस्तता–व्यस्तता जन्य सांसारिक जटिल समस्याओं के कारण उत्पन्न मानसिक अस्थिरता और उसके कारण विस्मृति से उत्पन्न होने की आंशका से कण्ठ परम्परा द्वारा प्राप्त ज्ञान को सुरक्षित रखने की आवश्यकता का जब अनुभव हुआ तब उसे उन उपलब्ध उपकरणों पर लिपिबद्ध कर उसे "पाण्डुलिपि" के नाम से अभिहित किया गया।

"सचित्र जैन पाण्डुलिपियों का एक कलात्मक अध्ययन" (सन्दर्भ आदिपुराण) शोध विषय को लेने का मेरा उद्देश्य अनमोल सचित्र जैन पाण्डुलिपियों का कलात्मक अध्ययन कर उनको प्रकाश में लाने का एक अथक प्रयास है। जैन परिवार से सम्बन्धित होने के नाते श्रावक के षठ् आवश्यक कार्य में स्वाध्याय एक प्रमुख कार्य है, जिसके तहत् विभिन्न ग्रन्थों, शास्त्रों व पाण्डुलिपियों का प्रतिदिन अध्ययन किया जाता है, उसी के अन्तर्गत मुझे जिनसेनाचार्य रचित आदिपुराण एवं पुष्पदंत रचित आदिपुराण के विषय में ज्ञात हुआ। इन पाण्डुलिपियों में सुन्दर दृष्टान्त लगभग 200 चित्र जिनसेनाचार्य रचित ग्रन्थ में, 541 चित्र पुष्पदंत रचित आदिपुराण में चित्रित हैं। जैनाचार्यों द्वारा पाण्डुलिपि को लिखने के साथ–साथ विषयानुकूल सुन्दर चित्रों का अंकन भी किया गया है। इन अनोखी व प्राचीन पाण्डुलिपि के चित्रों का कलात्मक अध्ययन मैंने अपने शोध में किया है।

इस विषय का प्रारूप प्रस्तुत करने हेतु मैंने शोध विषय को सात भागों में विभाजित किया है। जिसका विवरण क्रमशः इस प्रकार हैः–

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत '**जैन धर्म की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि'** का विस्तृत रूप से परिचय दिया है।

जैन धर्म के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में दिगम्बर व श्वेताम्बर, जैन धर्म व्रत उपवास, त्यौहार आदि का वर्णन विस्तार से किया है।

प्रत्येक संस्कृति में देश और जाति का अपना एक इतिहास होता है, इतिहास तथ्यों का संकलन मात्र नहीं, अपितु परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में उत्थान और पतन, विकास–अवनति, जय–पराजय की पृष्ठभूमि और तथ्य संकलन ही इतिहास कहलाता है। किसी धर्म का इतिहास

उसके उत्थान–पतन, प्रचार और ह्रास का होता है। जिस प्रकार किसी देश व समाज को वर्तमान संसार में सम्मान प्राप्त करने के लिए उसका पूर्व वृतान्त जानना आवश्यक है, उसी प्रकार किसी देश या समाज को वर्तमान संसार में सम्मान प्राप्त करने के लिये अपना इतिहास उपस्थित करने की आवश्यकता होती है।

शोध के **द्वितीय अध्याय 'जैन पाण्डुलिपियों का प्राचीन इतिहास'** के अन्तर्गत जैन धर्म की प्राचीनता कितनी प्राचीन है, का विस्तृत विवरण दिया गया है। जैन परम्परा के अनुसार जैन धर्म अनादि से है, जो समय–समय पर उत्पन्न होने वाले तीर्थंकरों द्वारा प्रवर्तित होता रहा है। सत्य अनादि–निधन है, स्वयं प्रमाणित है इसलिये सत्य को प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं है। जैन धर्म के अनुसार इस कालचक्र में जैन धर्म का प्रवर्तन प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने किया। ऋषभदेव का काल निर्णय आज की संख्या में नहीं किया जा सकता है, वह बहुत प्राचीन है। ऋग्वेद की अनेक रचनाओं में ऋषभदेव का सम्मानपूर्वक स्मरण किया गया है। **भागवत 5/2/6** में जैन धर्म के संस्थापक ऋषभदेव का उल्लेख है।

जैन अनुश्रुतियाँ, पाण्डुलिपियाँ, भारत का इतिहास उस समय से प्रस्तुत करती हैं जब आधुनिक नागरिक सभ्यता का विकास नहीं हुआ था। पाण्डुलिपियाँ समुन्नत प्रतिभा एवं संस्कृति की परिचायिका मानी जाती हैं, जिस प्रकार पुरातात्विक सामग्री एवं शिलालेख किसी भी देश के निर्माण के लिये प्रमाणिक तथ्य प्रस्तुत करते हैं उसी प्रकार पाण्डुलिपियाँ भी भूत–लक्षी प्रभाव से समकालीन इतिहास एवं संस्कृति को चित्रित करने हेतु बहुआयामी सामग्री का वरदान देती हैं।

अध्याय तृतीय में **'जिनसेनाचार्य रचित आदिपुराण पाण्डुलिपि'** अध्ययन तथा जिनसेनाचार्य रचित पाण्डुलिपि चित्रों का वर्णन है। जिनसेनाचार्य द्वारा रचित पाण्डुलिपि को कितने सर्गों में विभाजित किया है एवं प्रत्येक सर्ग में किसका वर्णन है साथ ही पाण्डुलिपि के जितने भी चित्र सुरक्षित है उन लगभग 66 सभी चित्रों का व्याख्यान विस्तार से किया है।

जिनसेनाचार्य रचित आदिपुराण पाण्डुलिपि में लगभग सुन्दर 200 दृष्टान्त चित्र है तथा आदिपुराण के दो भागों का वर्णन है एक है आदिपुराण दूसरा आचार्य गुणभद्र द्वारा रचित

उत्तरपुराण। ये ग्रन्थ संस्कृत भाषा में रचित है जिसको 47 पर्वों में विभाजित कर प्रत्येक पर्व के वर्णन का विस्तार किया गया है। प्रस्तुत पुराण में आचार्य ने उस समय के भट्टारकों का उल्लेख पाण्डुलिपि के पहले पत्र पर प्रस्तावना के रूप में, साथ ही जन्म से लेकर मोक्ष तक का विवरण सहज रूप से किया है।

अध्याय चतुथ के अन्तर्गत **'पुष्पदंत आचार्य द्वारा रचित आदिपुराण पाण्डुलिपि अध्ययन'** तथा चित्रों का विस्तार से वर्णन किया गया है।

ये पाण्डुलिपि अपभ्रंश भाषा में रचित है। इस ग्रन्थ में 102 संन्धिया है यह ग्रन्थ भी 2 भागों में विभक्त है आदिपुराण, उत्तरपुराण। उन 102 सन्धियों के विषयांगत प्रत्येक सन्धि में वर्णित कथा का लगभग 150 चित्रों के द्वारा विस्तार से वर्णन इस अध्याय में किया गया है।

आदिपुराण प्रथम भाग है, जिसमें तीर्थंकर, ऋषभदेव एवं उनके पुत्रों के जीवन–चरित का वर्णन हैं, बीसवीं सन्धि से उनके पूर्वभवों का वर्णन किया गया है इसको **'नाभेयचरित'** भी कहा जाता है। यह भाग प्रारम्भ की 37 सन्धियों में वर्णित हैं। शेष भाग **'उत्तरपुराण'** को 65 सन्धियों में वर्णित किया गया है।

इस ग्रन्थ को महापुराण कहते है। महापुराण जैन साहित्य में एक विशेष शब्द है इसमें त्रेषठश्लाकापुरूषों के जीवन चरित्र का वर्णन होता हैं, चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नौ नारायण, नौ प्रतिनारायण और नौ बलभद्र इन्हें जैन आगम में **त्रेषठश्लाकापुरुष'** चरित या 'महापुराण' के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

अध्याय पंचम में **:आदिपुराण पाण्डुलिपियों की चित्र प्रविधि एवं उनके चित्रों का कलात्मक अध्ययन'** विस्तार से प्रस्तुत है।

जिसके अन्तर्गत पाण्डुलिपि बनाने की विधि पाण्डुलिपि का विभाजन तथा कला के तत्वों पर आधारित चित्रों के कलात्मक अध्ययन पर प्रकाश डाला गया है। जिनसेनाचार्य रचित आदिपुराण पाण्डुलिपि चित्रों की आकृतियों तथा उनकी वेशभूषा में अपभ्रंश तथा मुगल शैली का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इसमें प्रमुख रूप से खनिज रंग – गेरु (लाल), हरताल (पीला),

लैपिसलाजुली (Lapislazuli) लाजवर्त (नीला), हिरोंजी (हरा), स्याही (काला) आदि विभिन्न प्रकार के खनिज रंगों के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है।

पुष्पदंत रचित आदिपुराण चित्रों में चित्रित छोटे कद की आकृतियाँ नुकीली आँख व नाक, वेशभूषा को नुकीली एवं एक दिशा की ओर जाती हुयी कोणीय रेखाओं से सुसज्जित दुपट्टों को दिखाया गया है। पाण्डुलिपि के प्रत्येक पत्र पर साथ–साथ दृष्टांत चित्रों को भी बनाया गया है। पत्र के दोनों ओर की हाशिये में काले रंग की दो समान पट्टियों व पृष्ठभूमि में कहीं–कहीं इमारतों का भी चित्रण है। इस पाण्डुलिपि में भी पहली पाण्डुलिपि के समान खनिज रंगों का प्रयोग है। साथ ही जैन धर्म का रंगों की अपेक्षा से क्या महत्व है तथा रंगों की मनोवैज्ञानिकता क्या होगी यदि एक रंग के विरोध दूसरा रंग प्रयोग हो इसका विस्तारपूर्वक वर्णन इस अध्याय में किया गया है।

मेरे शोध के अंतिम षष्ठम् अध्याय में **पुष्पदंत रचित एवं जिनसेनाचार्य रचित पाण्डुलिपि चित्रों का तुलनात्मक अध्ययन** किया गया है। पुष्पदंत रचित आदिपुराण एवं जिनसेनाचार्य रचित आदिपुराण दोनों में ही सुन्दर चित्रों का वर्णन है परन्तु फिर भी दोनों ही पाण्डुलिपि चित्रण में अन्तर दृष्टिगोचर होता है। प्रथम अंतर तो काल का है जैसे कि जिनसेनाचार्य द्वारा रचित आदिपुराण ईसा की नौवीं शताब्दी संवत् 1663 में लिखा गया जिनके चित्रों में मानवाकृतियों को थोड़ा बड़ा तथा हाशिये के स्थान पर दिखाया गया है। रंग संयोजन में जिनसेनाचार्य द्वारा रचित आदिपुराण में पुष्पदंत रचित आदिपुराण की अपेक्षाकृत अधिक जलीय रंगों का प्रयोग हुआ है। पुष्पदंत रचित आदिपुराण 10वीं शताब्दी में संवत् 1597 ईसवी (सन् 1540) में लिखा गया जिनके चित्रों में अपभ्रंश शैली का प्रभाव दर्शनीय है कोणीय रेखाओं से सुसज्जित आकृतियाँ व उनकी वेशभूषा एवं नुकीली कान तक खींची गयी आँखे व नाक, चपटा सिर तथा छोटे कद जैसी आकृतियाँ लौर चन्दा, चौर पंचाशिखा के चित्रों से समानता रखती है। चित्रों को रेखाचित्र के माध्यम से अंतर प्रस्तुतकर तुलनात्मक अध्ययन का विस्तार से विवरण प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय सप्तम् **'भारतीय चित्रकला में सचित्र जैन पाण्डुलिपियों का योगदान'** इस अध्याय के अन्तर्गत भारतीय चित्रकला में पाण्डुलिपियों का स्थान तथा महत्व का विवरण दृष्टांत चित्रों के साथ किया गया है।

पश्चिम भारत से प्राप्त जितनी भी पाण्डुलिपियाँ हैं वो जैन धर्म से सम्बन्धित हैं इनमें से आरम्भ के ग्रन्थ ताड़पत्र पर लिखे गये हैं समय के साथ–साथ पाण्डुलिपियों में चित्रण व पाण्डुलिपि लिपिबद्ध की परम्परा सम्पूर्ण भारत में फैल गयी थी जिसका वर्तमान स्वरूप पाण्डुलिपि संरक्षण व प्रकाशन के रूप में समाने आया है आज वर्तमान समय में पाण्डुलिपियों को संरक्षित कर प्रकाशित किया जा रहा है। अतः कला के क्षेत्र में जैन पाण्डुलिपियों का योगदान भारतीय परम्परा का एक अभिन्न अंग है।

अंत में शोध का उपसंहार प्रस्तुत करते हुये वर्तमान काल में पाण्डुलिपियों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला गया है, सचित्र जैन पाण्डुलिपियाँ, आदिपुराण तथा अन्य पाण्डुलिपियों के प्रकाशन सम्बन्धी समस्या का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास अन्त में निष्कर्ष रूप में किया गया है।

सृष्टि जैन